

दक्षिण एशिया में भारत की भूमिका

यह एडिटरियल 06/08/2024 को 'इंडियन एक्सप्रेस' में प्रकाशित "With Bangladesh in turmoil, why India should exercise caution" लेख पर आधारित है। इसमें भारत द्वारा बांग्लादेश में बदलते राजनीतिक परिदृश्य के प्रति सतर्क रवैया बनाए रखने और अपने रणनीतिक एवं आर्थिक हितों को सुरक्षित रखते हुए लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं के लिये समर्थन को संतुलित करने की आवश्यकता पर बल दिया गया है।

प्रलम्ब के लिये:

भारत-बांग्लादेश, म्यांमार में 2021 सैन्य तखतापलट, चीन-पाकस्तान आर्थिक गलियारा, हंबनटोटा बंदरगाह, रेडक्लिफ रेखा, 'इकोनॉमिस्ट इंटेलेजेंस यूनिट' के डेमोक्रेसी इंडेक्स 2020, तीस्ता नदी समझौता, 'बेल्ट एंड रोड' पहल, कच्छातीवु द्वीप मुद्दा, डॉकलाम मुद्दा, रोहिंगिया शरणार्थी, एक्ट-ईस्ट नीति, भारत-म्यांमार -थाईलैंड त्रिपक्षीय राजमार्ग।

मेन्स के लिये:

भारत के पड़ोस में मुद्दे, उपाय जो भारत पड़ोसी देशों के साथ अपने संबंधों को मजबूत करने के लिये अपना सकता है।

दक्षिण एशिया में उभरते भू-राजनीतिक परिदृश्य भारत के लिये आवश्यक बनाते हैं कि वह अपने पड़ोसी देशों के प्रति अपने दृष्टिकोण को वविकपूर्ण और व्यावहारिक रूप प्रदान करे। बांग्लादेश में हाल के घटनाक्रम, जिसके परिणामस्वरूप बांग्लादेश की प्रधानमंत्री को इस्तीफा देना पड़ा और देश में सेना का अंतरिम शासन स्थापित हुआ, क्षेत्रीय राजनीतिक अस्थिरता और भारत के लिये रणनीतिक संबंधों को बनाए रखते हुए अपने पड़ोसी देशों की लोकतांत्रिक आकांक्षाओं का समर्थन करने की अनिवार्यता को उजागर करता है। ताज़ा घटनाक्रम के बहाने हम वर्ष 2006 में नेपाल में बहुदलीय लोकतंत्र के लिये चले आंदोलन को याद करें तो आवश्यक होगा कि भारत का कूटनीतिक रुख लोकप्रिय आकांक्षा के अनुरूप हो और स्थिरता एवं सकारात्मक संलग्नता को बढ़ावा दिया जाए।

चूँकि क्षेत्रीय समीकरण लगातार बदल रहे हैं, अपने पड़ोस में शांति, स्थिरता और विकास को बढ़ावा देने के लिये भारत की प्रतिबद्धता न केवल उसके अपने रणनीतिक हितों को सुरक्षित करेगी, बल्कि क्षेत्रीय सद्भाव एवं समृद्धि के व्यापक लक्ष्य में भी योगदान देगी।



भारत के पड़ोसी देश लगातार राजनीतिक एवं आर्थिक उथल-पुथल का सामना क्यों कर रहे हैं?

- **नागरिक शासन में सैन्य हस्तक्षेप:** दक्षिण एशिया के कई देशों में सैन्य तख्तापलट और हस्तक्षेप का इतिहास रहा है, जो लोकतांत्रिक संस्थाओं को कमजोर करता है।
 - स्वतंत्रता के बाद से पाकिस्तान ने अपने अस्तित्व के लगभग आधे समय तक प्रत्यक्ष सैन्य शासन का सामना किया है।
 - **म्यांमार में 2021 सैन्य तख्तापलट** में सेना (Tatmadaw) ने सत्ता पर कब्जा कर लिया और असैन्य नेताओं को हरिसत में ले लिया, जिससे व्यापक नागरिक अशांति का प्रसार हुआ।
 - बांग्लादेश में भी सेना ने कई बार हस्तक्षेप किया है, जिनमें **वर्ष 2007-2008 का** घटनाक्रम सबसे उल्लेखनीय है।
 - इन हस्तक्षेपों से प्रभाव: **राजनीतिक अस्थिरता, मानवाधिकार उल्लंघन और आर्थिक व्यवधान** की स्थिति बनती है।
- **आर्थिक कमजोरियाँ और बाह्य नरिभरताएँ:** वर्ष 2022 में श्रीलंका का आर्थिक संकट इसका एक स्पष्ट उदाहरण है, जिसमें बाह्य ऋण सर्वकालिक उच्च स्तर पर पहुँच गया।
 - बांग्लादेश की वस्त्र उद्योग पर नरिभरता, जो उसके नरियात में **80% हसिसेदारी रखता** है, उसे वैश्विक वस्त्र मांग में उतार-चढ़ाव के प्रति संवेदनशील बनाती है।
 - मालदीव का पर्यटन क्षेत्र उसके सकल घरेलू उत्पाद में लगभग **28% का योगदान** देता है, जिसके कारण उसे कोविड-19 महामारी जैसे बाह्य आघातों के कारण संकट का सामना करना पड़ा और उसकी अर्थव्यवस्था सिकुड़ गई।
 - वर्ष 2022 के अंत तक पाकिस्तान का **वर्षीय ऋण 130.6 बिलियन अमेरिकी डॉलर** तक पहुँच गया था, जिसमें चीन की हसिसेदारी लगभग **30%** थी। इसके कारण चीन को पाकिस्तान पर आर्थिक प्रभाव रखने का अवसर प्राप्त होता है।
- **भू-राजनीतिक प्रतिस्पर्धा और बाह्य प्रभाव:** **चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारा (CPEC)** के माध्यम से पाकिस्तान की अवसंरचना में चीन के निवेश ने **इस्लामाबाद पर बीजिंग** के प्रभाव को गंभीर रूप से बढ़ा दिया है।
 - श्रीलंका में ऋण संबंधी समस्याओं के कारण **हंबनटोटा बंदरगाह को 99 वर्ष के पट्टे** पर चीन को सौंपना इस बात का उदाहरण है कि आर्थिक नरिभरता किस प्रकार राजनीतिक रियायतों में परिणत हो सकती है।
 - नेपाल द्वारा भारत और चीन दोनों के साथ **संतुलनकारी संबंध रखने का दृष्टिकोण** चीन की सहायता से नरिमति पोखरा अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे जैसी अवसंरचना परियोजनाओं में स्पष्ट प्रकट होता है।
- **जलवायु परिवर्तन और पर्यावरणीय चुनौतियाँ:** मालदीव, जिसका **80% भूभाग समुद्र तल से 1 मीटर से भी कम ऊँचाई** पर है, बढ़ते समुद्री स्तर के कारण अस्तित्व के लिये संकट का सामना कर रहा है।
 - विश्व बैंक के अनुसार, वर्ष **2050 तक बांग्लादेश में संभावित रूप से 13.3 मिलियन** आंतरिक जलवायु प्रवासी (internal climate migrants) होंगे।
 - वर्ष 2022 में पाकिस्तान में वनाशकारी बाढ़ आई जिससे लाखों लोग प्रभावित हुए और भारी आर्थिक क्षति पहुँची।
 - नेपाल के ग्लेशियर प्रतिवर्ष **10 से 60 मीटर की दर से पीछे** हट रहे हैं, जिससे लाखों लोगों के लिये जल सुरक्षा खतरे में पड़ गई है।
- **औपनिवेशिक संरचनाओं और कमजोर संस्थाओं की वरिषत:** वर्ष 1947 में जलदबाज़ी में खींची गई **रेडक्लिफ रेखा** ने कई सीमा विवादों को जन्म दिया, जिसमें कश्मीर को लेकर जारी भारत-पाकिस्तान संघर्ष भी शामिल है।
 - वर्ष **1971 में बांग्लादेश का नरिमाण औपनिवेशिक** सीमाओं की अस्थिरता का ही एक अन्य उदाहरण है।
 - **इकोनॉमिस्ट इंटेलेजेंस यूनिट के डेमोक्रेसी इंडेक्स 2020** के अनुसार, अधिकांश दक्षिण एशियाई देश 'तुरतपूरण लोकतंत्र'

(flawed democracy) या 'हाइब्रिड शासन' की श्रेणियों में आते हैं, जो कमज़ोर संस्थानों में नहिति राजनीतिक अस्थिरता को उजागर करते हैं।

- **जनसांख्यिकीय दबाव और सामाजिक-आर्थिक असमानताएँ:** भारत के पड़ोसी देशों में युवाओं की विशाल आबादी पाई जाती है।
 - पाकिस्तान में लगभग 64% आबादी 30 वर्ष से कम आयु के लोगों की है, जिससे रोजगार सृजन करने और उन्हें चरमपंथी विचारधाराओं की ओर आकर्षित होने से रोकने के लिये व्यापक दबाव पैदा हो रहा है।
 - क्षेत्र में युवा बेरोज़गारी दर उच्च है; जैसे नेपाल में 20.5% और श्रीलंका में 24.74%।

भारत को अपने पड़ोस में वर्तमान में कनि प्रमुख चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है?

- **पाकिस्तान:** कश्मीर और सीमा-पार आतंकवाद को लेकर भारत-पाकिस्तान संबंध तनावपूर्ण बने हुए हैं।
 - पाकिस्तान हाल के समय में देश में जारी आर्थिक संकट, राजनीतिक अस्थिरता और IMF के वारंता जैसे मुद्दों से जूझ रहा है।
 - चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारे के माध्यम से चीन के साथ पाकिस्तान की बढ़ती नकटता भारत के लिये रणनीतिक चुनौतियाँ उत्पन्न कर रही है।
 - हाल में रियासी ज़िले में हुए आतंकवादी हमले, जो कथित रूप से पाकिस्तान द्वारा प्रायोजित थे, ने तनाव को और बढ़ा दिया है।
- **बांग्लादेश:** वरिष्ठ परदृश्यों के बीच वर्तमान प्रधानमंत्री के इस्तीफे के कारण बांग्लादेश में गंभीर राजनीतिक उथल-पुथल की स्थिति व्याप्त है।
 - यह परदृश्य पछिले दशक में कसि सति हुई भारत-बांग्लादेश संबंधों की सकारात्मक दशा को प्रभावित कर सकता है।
 - साझा जल संसाधनों का प्रबंधन (विशेष रूप से तीसता नदी समझौता), अवैध प्रवासन से निपटना और आर्थिक सहयोग बनाए रखना दोनों देशों के बीच मौजूद प्रमुख मुद्दे हैं।
 - असम जैसे भारतीय राज्यों द्वारा अवैध प्रवासन (विशेषकर बांग्लादेश से) के बारे में लंबे समय से चिंताएँ जताई जा रही हैं।
 - अगस्त 2024 में एक क्षेत्रीय दल ने बांग्लादेश में अशांति और सीमा के बाड़रहति हसिसों से अवैध आवरणन में वृद्धि के बारे में चिंता व्यक्त की।
 - ऐसी आशंकाएँ व्यक्त की गई हैं कि अवैध प्रवासियों के आने से असमिया लोग अपने ही राज्य में अल्पसंख्यक बन सकते हैं, जैसा कि त्रिपुरा और सकिकमि राज्यों में हुआ।
 - बांग्लादेश में संभावित सैन्य शासन से ये मुद्दे और भी गंभीर बन सकते हैं, जनिमें प्रवासन दबाव और अल्पसंख्यक संबंधी चिंताएँ भी शामिल हैं।
- **नेपाल:** नेपाल का राजनीतिक परदृश्य जटिल बना हुआ है और सरकार में लगातार परिवर्तन के कारण नीतितगत स्थिरता प्रभावित हो रही है।
 - बेल्ट एंड रोड पहल सहति चीन के साथ नेपाल के बढ़ते आर्थिक संबंध भारत के लिये चिंता का वषिय हैं।
 - सीमा विवाद, विशेषकर कालापानी क्षेत्र का मुद्दा, दोनों देशों के बीच तनाव का स्रोत बना हुआ है।
 - हालाँकि सांस्कृतिक और लोगों के परस्पर संबंध मज़बूत बने हुए हैं और जलवदियुत एवं अवसरचना विकास में सहयोग बढ़ाने की व्यापक संभावनाएँ मौजूद हैं।
- **श्रीलंका:** श्रीलंका धीरे-धीरे अपने गंभीर आर्थिक संकट से उबर रहा है, जहाँ भारत उसे आर्थिक सहायता प्रदान करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका नभिरा रहा है। भारत वह पहला देश था जसिने श्रीलंका के वित्तपोषण और ऋण पुनर्गठन के लिये अपना समर्थन पत्र अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष को सौपा था।
 - कचचातीव द्वीप, श्रीलंका में तमिल अल्पसंख्यकों के साथ दुर्व्यवहार और श्रीलंका के संवधान में 13वें संशोधन का कार्यान्वयन द्वपिकषीय संबंधों में महत्त्वपूर्ण मुद्दे बने हुए हैं।
- **मालदीव:** मालदीव में चीन समर्थक राष्ट्रपति के निर्वाचन के साथ देश की वदिश नीति में बदलाव आया है, जहाँ देश में भारतीय सैन्य उपस्थिति को कम करने की मांग की गई और सत्तारूढ़ दल द्वारा चुनाव प्रचार के दौरान व्यापक रूप से 'इंडिया-आउट' अभियान चलाया गया।
 - इससे हदि महासागर क्षेत्र में भारत के रणनीतिक हतियों के लिये चुनौती उत्पन्न हुई है।
- **म्याँमार:** म्याँमार में सैन्य तख्तापलट और उसके बाद उत्पन्न नागरिक अशांति ने भारत के लिये जटिल चुनौतियाँ पैदा की।
 - पूर्वोत्तर राज्यों में रोहगिया शरणार्थी की आमद तथा अस्थिर म्याँमार में चीन के प्रभाव में वृद्धि की संभावना भारत के लिये गंभीर चिंता का वषिय हैं।
 - यद्यपि भारत के म्याँमार के साथ रणनीतिक एवं आर्थिक हति जुड़े हुए हैं, जनिमें पूर्वोत्तर में उग्रवाद का मुकाबला करना और एकट-ईसट नीति के माध्यम से कनेक्टिविटी परियोजनाओं को क्रियान्वति करना शामिल है, फरि भी उसे मानवाधिकारों और लोकतंत्र संबंधी चिंताओं के साथ संतुलन बनाए रखना होगा।
- **भूटान:** यद्यपि भारत-भूटान संबंध मज़बूत बने हुए हैं, लेकिन भूटान द्वारा अपने वदिशी संबंधों में वविधिता लाने तथा भारत पर आर्थिक निर्भरता कम करने के प्रयास नए समीकरण प्रस्तुत कर रहे हैं।
 - भूटान-भारत और चीन के बीच डोकलाम का अनसुलझा मुद्दा रणनीतिक चिंता का वषिय बना हुआ है।
 - भारत भूटान का प्रमुख विकास साझेदार बना हुआ है, लेकिन भूटान की उभरती आकांक्षाओं को प्रतबिबिति करने के लिये संबंधों को अद्यतन करने की आवश्यकता है।
- **अफगानिस्तान:** तालबिन की सत्ता में वापसी ने भू-राजनीतिक परदृश्य को नया रूप प्रदान किया है, लेकिन भारत मानवीय सहायता और अफगानिस्तान क्रिकेट टीम की मेजबानी के माध्यम से सौहारदपूर्ण संबंध बनाए रखने में सफल रहा है।
 - हालाँकि, अफगानिस्तान के विकास में भारत का महत्त्वपूर्ण निवेश खतरे में है क्योंकि इसका रणनीतिक प्रभाव कम हो गया है।

पड़ोसी देशों में राजनीतिक और आर्थिक उथल-पुथल के इतिहास के बावजूद भारत कसि प्रकार प्रत्यास्थ बना रहा है?

- **प्रबल संवैधानिक ढाँचा और संस्थागत सामर्थ्य:** भारत का लोकतंत्र इसके व्यापक संवधान पर आधारित है, जसिने वर्ष 1950 से अब तक वभिन्न चुनौतियों का डटकर मुकाबला किया है।

- **संवधान के मूल संरचना का सिद्धांत (basic structure doctrine)**, जसि ऐतहासिक **केशवानंद भारती मामले (1973)** में स्थापित किया गया था, संवधान के मर्म की रक्षा करता है।
- भारत की **स्वतंत्र न्यायपालिका**, जसिकी **पुष्टी 2G स्पेक्ट्रम मामले में (2012) 122 दूरसंचार लाइसेंस रद्द** करने जैसे महत्वपूर्ण हस्तक्षेप से हुई, कार्यपालिका की शक्ति पर एक मजबूत अंकुश के रूप में कार्य करती है।
 - इसके अतिरिक्त, कार्यपालिका, विधायिका और न्यायपालिका के बीच शक्तियों का पृथक्करण एक संतुलित एवं जवाबदेह शासन संरचना सुनिश्चित करता है।
- **भारत निरिवाचन आयोग (ECI)** ने और विश्व की सबसे बड़ी लोकतांत्रिक प्रक्रिया का कुशल प्रबंधन करते हुए लगातार स्वतंत्र एवं निष्पक्ष चुनाव संपन्न कराए हैं।
- इन संस्थाओं ने, यदा-कदा विवादों के बावजूद, लोकतांत्रिक मानदंडों को कायम रखने में प्रत्यासूचता का प्रदर्शन किया है।
- **जीवंत नागरिक समाज और स्वतंत्र प्रेस:** भारत में एक गतिशील नागरिक समाज और मीडिया परदृश्य मौजूद है जो लोकतांत्रिक संवाद में सक्रिय रूप से भाग लेता है।
 - **सूचना का अधिकार अधिनियम (2005)** ने नागरिकों को जवाबदेही की मांग करने का अधिकार दिया है, जसिके तहत प्रतदिनि 4800 से अधिक RTI आवेदन दायर किये जाते हैं।
 - नागरिक समाज के आंदोलनों ने सरकार की नीतियों को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित किया है, जैसा कि जिन लोकपाल आंदोलन के दबाव में भ्रष्टाचार वरीधी कानून के अधिनियमन के रूप में देखा गया।
 - भारत का प्रेस राजनीतिक पूर्वाग्रहों की चुनौतियों का सामना करता रहा है, लेकिन **100,000 से अधिक पंजीकृत प्रकाशनों** के साथ यह काफी हद तक स्वतंत्र और विधितापूर्ण भी बना हुआ है।
 - डिजिटल क्रांति ने सूचना तक पहुँच को और अधिक लोकतांत्रिक बना दिया है, जहाँ **2022 तक भारत में 759 मिलियन से अधिक इंटरनेट उपयोगकर्ता** थे।
- **भारत के अराजनीतिक सशस्त्र बल और नागरिक नियंत्रण:** भारत के सशस्त्र बलों ने स्वतंत्रता के बाद से ही नागरिक प्राधिकार का सम्मान करते हुए लगातार अपना अराजनीतिक रुख बनाए रखा है।
 - कुछ पड़ोसी देशों के विपरीत भारत में कभी भी सैन्य तख्तापलट नहीं हुआ है।
 - नागरिक नियंत्रण का सिद्धांत गहराई से समाहित है, जहाँ **राष्ट्रपति सर्वोच्च कमांडर** होता है और नीतितगत नरिणय निरिवाचिता प्रतनिधियों द्वारा लिये जाते हैं।
 - **राजनीतिक सत्ता के बजाय राष्ट्रीय सुरक्षा पर सशस्त्र बलों** का ध्यान प्राकृतिक आपदाओं के दौरान उनकी महत्वपूर्ण भूमिका से स्पष्ट होता है (जैसे कि वर्ष 2013 में उत्तराखंड बाढ़ बचाव **अभियान** और **अभी वायनाड में जारी बचाव अभियान**) और असैन्य नेतृत्व में राष्ट्र की सेवा के प्रत उनकी प्रतबिद्धता को सुदृढ़ करता है।
- **संघीय संरचना और विकेंद्रीकरण:** भारत की संघीय प्रणाली शक्ति वितरण और क्षेत्रीय स्वायत्तता का अवसर प्रदान करती है, जो एक विधिता राष्ट्र के प्रबंधन के लिये महत्वपूर्ण है।
 - **73वें और 74वें संवधान संशोधन (1992)** ने स्थानीय शासन को मजबूत किया।
 - वर्ष 2017 में वस्तु एवं सेवा कर (GST) के कार्यान्वयन ने, प्रारंभिक चुनौतियों के बावजूद, सहकारी संघवाद को प्रदर्शित किया।
 - भारत का **संघीय ढांचा विशिष्ट क्षेत्रीय आवश्यकताओं को पूरा करने के लिये विशेष उपबंधों की अनुमति देता है।**
 - संवधान का अनुच्छेद 371 कई पूर्वोत्तर राज्यों को, उनकी विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान का सम्मान करते हुए, विशेष दर्जा प्रदान करता है।
 - **वर्ष 2019 में जम्मू और कश्मीर का पुनर्र्गठन**, हालाँकि विविदास्पद था, लेकिन इसे संवैधानिक तरीकों से किया गया था।
 - क्षेत्रीय मांगों के जवाब में तेलंगाना (2014) जैसे नए राज्यों का नरिमाण प्रणाली के लचीलेपन को परलिकषिता करता है।
 - **विभिन्न क्षेत्रों में राज्यों की स्वायत्तता नीतितगत प्रयोग और स्थानीय शासन** की अनुमति देती है, जैसा कि केरल की **कोवडि-19** के प्रत सफल प्रतक्रिया या गुजरात की आर्थिक नीतियों में देखा गया है।
- **राजनीतिक परिवर्तन और बहुदलीय प्रणाली:** भारत के लोकतंत्र ने कई बार सत्ता का शांतपूरण हस्तांतरण प्रदर्शित किया है, जो लोकतांत्रिक स्वास्थ्य का एक प्रमुख संकेतक है।
 - वर्ष 2014 के चुनाव के परिणामस्वरूप नेतृत्व में बदलाव हुआ, **जबकि 2024 के चुनावों में एक मजबूत लोकतांत्रिक** प्रक्रिया देखने को मली, जहाँ किसी भी एक दल को स्पष्ट बहुमत नहीं मली।
- **आर्थिक उदारीकरण और मध्यम वर्ग की वृद्धि:** वर्ष 1991 के बाद से भारत के आर्थिक सुधारों ने उभरते मध्यम वर्ग को बढ़ावा देकर और गरीबी को कम कर लोकतांत्रिक स्थिरता में योगदान दिया है।
 - लगभग **350 मिलियन की आबादी के साथ भारतीय मध्यम वर्ग लोकतंत्र** में एक स्थायित्वकारी शक्ति के रूप में कार्य करता है।
- **भक्ति हतियों और अलगाववादी प्रवृत्तियों का प्रबंधन:** भारत का लोकतंत्र अपनी सांस्कृतिक विधिता से शक्ति प्राप्त करता है, जहाँ **संवधान में 22 आधिकारिक भाषाओं** को मान्यता दी गई है और कई सकारात्मक कार्रवाई नीतियों अपनाई गई हैं।
 - विवादों के बावजूद आरक्षण प्रणाली ने हाशिये पर स्थिति समुदायों का प्रतनिधित्व बढ़ाया है।
 - भारत ने अपने लोकतांत्रिक ढाँचे के भीतर क्षेत्रीय आकांक्षाओं और अलगाववादी आंदोलनों से निपटने में उल्लेखनीय क्षमता दिखाई है।
 - **वर्ष 2015 का नागा शांति समझौता और वर्ष 2019 में त्रपुरा** के NLFT के साथ संपन्न त्रपिक्षीय समझौता इसके प्रमुख उदाहरण हैं।
 - केवल सैन्य समाधान के बजाय समझौता वार्ता और राजनीतिक एकीकरण का भारत का दृष्टिकोण विधिता के बीच एकता बनाए रखने में महत्वपूर्ण तत्व रहा है।

भारत अपने पड़ोसी देशों के साथ संबंधों को बेहतर बनाने के लिये कौन-से कदम उठा सकता है?

- **कनेक्टविटि उत्प्रेरण – ‘ब्रजिगि बॉर्डर्स, बलिडिगि बॉण्ड्स’ (Connectivity Catalyst – Bridging Borders, Building Bonds):** भारत को बांग्लादेश-भूटान-भारत-नेपाल (BBIN) मोटर वाहन समझौते और भारत-म्यांमार-थाईलैंड त्रिपक्षीय राजमार्ग जैसी अपनी कनेक्टविटि पहलों में तेज़ी लानी चाहिये।
 - भारत अपनी सीमाओं पर नेपाल और बांग्लादेश के साथ सफल एकीकृत जाँच चौकियों (Integrated Check Posts- ICPs) की तरह और भी ICPs स्थापति कर सकता है।
 - इसके अतिरिक्त, दक्षिण एशियाई उपग्रह (South Asian Satellite) जैसी परियोजनाओं के माध्यम से डिजिटल कनेक्टविटि का वस्तुतः क्षेत्रीय एकीकरण को बढ़ावा दे सकता है।
 - ये पहलें भारत को क्षेत्रीय समृद्धि के सूत्रधार के रूप में स्थापित करेंगी और क्षेत्रीय आधिपत्यवादी देश होने की धारणा या आशंका को खारज करेंगी।
- **आर्थिक सशक्तिकरण – सहायता से व्यापार तक (Economic Empowerment – From Aid to Trade):** भारत को सहायता-केंद्रित दृष्टिकोण से व्यापार और निवेश-केंद्रित रणनीति की ओर आगे बढ़ना चाहिये।
 - अधिमिन्य व्यापार शर्तों (preferential trade terms) के साथ पड़ोस प्रथम आर्थिक क्षेत्र (Neighborhood First Economic Zone) के क्रियान्वयन से क्षेत्रीय आर्थिक एकीकरण को बढ़ावा मलि सकता है।
 - सफल सदिध हुए भारत-बांग्लादेश सीमा हाटों की तरह संयुक्त आर्थिक क्षेत्र स्थापति करने से स्थानीय अर्थव्यवस्थाओं को बढ़ावा मलिगा।
 - इस दृष्टिकोण से पारस्परिक आर्थिक निर्भरता पैदा होगी, जिससे पड़ोसियों के बीच प्रतिकूल नीतियों का आकर्षण कम हो जाएगा।
- **सांस्कृतिक सगम – ‘सॉफ्ट पावर’ की हलोर (Cultural Confluence – Soft Power Surge):** भारत को अपनी समृद्ध सांस्कृतिक वरिसत का लाभ उठाते हुए भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद (ICCR) छात्रवृत्ति जैसी पहलों का वस्तितार करना चाहिये और पड़ोसी देशों में भारतीय सांस्कृतिक केंद्रों की संख्या बढ़ानी चाहिये।
 - ‘बुधसि्टि सर्कटि’ जैसी पहलों के माध्यम से सीमा-पार पर्यटन को बढ़ावा देने से लोगों के बीच परस्पर संपर्क बढ़ सकता है।
 - भारत को अपने प्रमुख संस्थानों में पड़ोसी देशों के छात्रों को अवसर देने के लिये अपनी क्षमता बढ़ानी चाहिये।
 - सांस्कृतिक समझ को बढ़ावा देने के लिये बॉलीवुड और भारत के अन्य क्षेत्रीय सनिमा को रणनीतिक रूप से प्रोत्साहति कथिा जा सकता है।
- **आपदा कूटनीति – प्रतिकूल परिस्थितियों में एकजुटता (Disaster Diplomacy – United in Adversity):** प्राकृतिक आपदाओं के प्रतिकूल क्षेत्र की संवेदनशीलता को देखते हुए, भारत को दक्षिण एशियाई आपदा प्रतिक्रिया बल (South Asian Disaster Response Force) की स्थापना में अग्रणी भूमिका नभानी चाहिये।
 - इसमें साझा पूर्व-चेतावनी प्रणालियाँ और समन्वित प्रतिक्रिया तंत्र शामिल हो सकते हैं।
 - अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी में भारत की विशेषज्ञता का उपयोग क्षेत्रीय उपग्रह-आधारित आपदा प्रबंधन प्रणाली विकसित करने के लिये कथिा जा सकता है।
 - यह दृष्टिकोण भारत को एक ज़म्मेदार क्षेत्रीय नेता के रूप में स्थापित करेगा, जो संकट के समय व्यावहारिक सहायता के माध्यम से सद्भावना को बढ़ावा देगा।
- **बहुपक्षीय मध्यस्थता – क्षेत्रीय मंचों को पुनर्जीवित करना (Multilateral Mediation-Revitalizing Regional Forums):** भारत को आम सहमति बनाने के लिये जलवायु परिवर्तन, सार्वजनिक स्वास्थ्य और शिक्षा जैसे गैर-वविदासपद क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करते हुए सारक (SAARC) को पुनर्जीवित करने की दशिा में कार्य करना चाहिये।
 - ट्रैक II कूटनीति और थकि ट्रैक सहयोग को प्रोत्साहति करने से वविदासपद मुद्दों को सुलझाने में मदद मलि सकती है।
 - भारत बहुपक्षवाद को बढ़ावा देकर अपना प्रभुत्व जमाने संबंधी आशंकाओं को दूर कर सकता है और अधिक सहयोगात्मक क्षेत्रीय वातावरण का निर्माण कर सकता है।
- **हरति कूटनीति – पारिस्थितिकी सहयोगी (Green Diplomacy – Eco-Allies):** चूँकि जलवायु परिवर्तन के कारण क्षेत्र के कई देशों के लिये अस्तित्व का खतरा उत्पन्न हो गया है, भारत को दक्षिण एशियाई हरति गठबंधन (South Asian Green Alliance) का नेतृत्व करना चाहिये।
 - इसमें स्वच्छ प्रौद्योगिकियों को साझा करना, जलवायु-अनुकूल कृषि पर संयुक्त अनुसंधान करना और वैश्विक जलवायु वार्ता में समन्वित रुख अपनाना शामिल हो सकता है।
 - भारत अपने पड़ोसियों को अपने उभरते हरति हाइड्रोजन और सौर प्रौद्योगिकी क्षेत्रों तक अधिमिन्य पहुँच की पेशकश भी कर सकता है।
 - यह हरति कूटनीति भारत को क्षेत्रीय पारिस्थितिक सुरक्षा में एक ज़म्मेदार हतिधारक के रूप में स्थापित करेगी।
- **खेल एकता – एथलेटिक प्रयासों के माध्यम से एकजुटता (Sports Solidarity-Uniting Through Athletic Endeavors):** भारत दक्षिण एशियाई खेलों को पुनर्जीवित करने और वस्तितारित करने में अग्रणी भूमिका नभिा सकता है, जहाँ अधिकाधिक खेल और सांस्कृतिक कार्यक्रम शामिल कथिा जा सकते हैं।
 - दक्षिण एशियाई खेल विकास कोष (South Asian Sports Development Fund) की स्थापना से पूरे भूभाग में खेल अवसरचना में सुधार लाने में मदद मलि सकती है।
 - भारत पड़ोसी देशों के एथलीटों को अपनी विश्वस्तरीय प्रशिक्षण सुविधाएँ और कोच प्रदान कर सकता है।
 - इस भूभाग में क्रिकेट की लोकप्रियता को देखते हुए अधिकाधिक द्विपक्षीय और बहुपक्षीय क्रिकेट शृंखलाओं के आयोजन से लोगों के बीच आपसी संपर्क को बढ़ावा मलि सकता है।
 - यह खेल कूटनीति सकारात्मक सहभागिता के अवसर पैदा करेगी तथा भारत के ‘सॉफ्ट पावर’ को प्रदर्शित करेगी।

अभ्यास प्रश्न: पड़ोसी देशों में हाल के राजनीतिक और आर्थिक उथल-पुथल के बीच उनके साथ अपने संबंधों को प्रबंधित करने में भारत के समक्ष वदियमान चुनौतियों एवं अवसरों पर वधिार कीजिये। भारत क्षेत्रीय स्थिरता और सहयोग की आवश्यकता के साथ अपने रणनीतिक हतियों को कसि प्रकार प्रभावी ढंग से संतुलित कर सकता है?

UPSC सविलि सेवा परीक्षा, वगित वर्ष के प्रश्न

??????????:

प्रश्न. कभी-कभी समाचारों में देखा जाने वाला एलीफेंट पास का उल्लेख नमिनलखिति में से किस मामले के संदर्भ में किया जाता है? (2009)

- (a) बांग्लादेश
- (b) भारत
- (c) नेपाल
- (d) श्रीलंका

उत्तर: (d)

??????????:

प्रश्न. भारत-श्रीलंका संबंधों के संदर्भ में विविधता कीजिये कि किस प्रकार आंतरिक (देशीय) कारक विदेश नीतिको प्रभावित करते हैं। (2013)

प्रश्न. "बहुधार्मिक व बहुजातीय समाज के रूप में भारत की विविध प्रकृति, पड़ोस में देख रहे अतविवाद के संघात के प्रति निरिपद नहीं है।" ऐसे वातावरण के प्रतिकार के लिये अपनाई जाने वाली रणनीतियों की विविधता कीजिये। 2014

प्रश्न. "चीन एशिया में संभावित सैन्य शक्त की स्थिति विकसित करने के लिये अपने आर्थिक संबंधों और सकारात्मक व्यापार अधिशेष का उपयोग उपकरण के रूप में कर रहा है"। इस कथन के आलोक में भारत पर पड़ोसी देश के रूप में इसके प्रभाव की चर्चा कीजिये। (2017)

PDF Reference URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/from-crisis-to-cooperation-india-s-role-in-south-asia>

